Artistic Narration : A Peer Reviewed Journal of Visual & Performing Art
Vol. VI 2015
ISSN (P) : 0976-7444
(e) : 2395-7247

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत का विभिन्न कालों में विकास का अध्ययन पंजाब एवं दिल्ली के विशेष संदर्भ में

डॉ० पुष्पा चौहान*
डा० ओ० पी० चौहान**

8

भारत सरकार ने संगीत कला के विकास में महान योगदान दिया है। सन् 1952 में संगीत कला को प्रोत्साहन देने हेतु कुशल संगीतज्ञों को राष्ट्रपति पदक प्रदान करना प्रारंभ किया। 1953 में 'संगीत नाटक अकादमी' तथा 1954 में 'ललित कला अकादमी' की स्थापना की। आकाशवाणी के विभिन्न केन्द्र स्थापित किये गये। ख्याति प्राप्त वृद्ध संगीतज्ञों को मान–पत्रा भेंट किये जाने लगे। 'संगीत' तथा 'संगीत कला विहार' संगीत पत्रिाकाओं का प्रकाशन किया गया। श्रेष्ठ संगीतज्ञों को विदेश में अपनी कला प्रदर्शन हेतु जाने की सुविधाएं प्रदान की गई। आज प्रारम्भ से लेकर उच्च शिक्षा तक संगीत एक विषय के रूप में पाठ्यक्रम में सम्मिलित हो चुका है। आकाशवाणी तथा दूरदर्शन के विभिन्न केन्द्रों से शास्त्रीय संगीत तथा सुगम संगीत के अन्तर्गत भजन, गज़ल, गीत आदि के कार्यक्रम प्रसारित किये जाते हैं।

शास्त्रीय संगीत हमारी धरोहर है। जिस राष्ट्र का संगीत अपनी आत्मिक चमक खो बैठता है, अपने आन्तरिक ऐश्वर्य को लोप कर देता है, और अपने पावन रूप को विनिष्ट कर बैठता है, वह राष्ट्र कभी भी शक्तिशाली नहीं हो सकता। किसी भी राष्ट्र के गौरव को सजीव बनाए रखने के लिए सबसे प्रथम उसके संगीत के एतिहासिक रूप को विशेषकर जब वह देश विदेशियों के अधीन रहा हो, प्राणवान रखना बहुत जरूरी है जिससे की वह राष्ट्र अपनी खोई हुई चेतना को पुनः प्राप्त कर सके। जब तक संगीत के एतिहासिक गौरव को सजीव नहीं बनाया जाएगा, तब तक आप अपने राष्ट्र को नव–स्फूर्ति, नव–चेतना एवं नव–जीवन प्रदान नहीं कर सकते । शास्त्रीय संगीत भक्ति का एक श्रेष्ठ माध्यम है और इसमें इतनी शक्ति है कि वह साधरण इन्सान की अर्न्तआत्मा को झन्कोर कर रख दें। संगीत किसी देश की संस्कृति की आत्मा है। किसी देश की संस्कृति का आधार ही संगीत है। उस संस्कृति को युगों–युगों तक जीवित रखने के लिए संगीत का महत्वपूर्ण स्थान है। कोई भी उत्सव, पर्व, बिना संगीत के अधूरा है।

उत्तरभारतीय शास्त्रीय संगीत का विभिन्न कालों में विकास

उत्तरभारतीय संगीत का विकासक्रम विभिन्न कालों में विभाजित किया गया है।

**फेकल्टी, संगीत विभाग, पीजीजीसीजी, सैक0 11, चंडीगढ़*
***एसो0 प्रोफे0, संगीत विभाग, राज0 स्ना0 महाविद्यालय, राजगढ़, हि0प्र0*

© 2015 Journal Anu Books. Authors are responsible for any plagiarism issues.

Artistic Narration : A Peer Reviewed Journal of Visual & Performing Art ISSN (P) : 0976-7444
Vol. VI 2015 (e) : 2395-7247

नाद–ब्रह्म से संगीत की उत्पत्ति होने के कारण सम्पूर्ण सृष्टि ही अदृश्य रूप से संगीतमय है तथा संपूर्ण वायुमण्डल संगीत की स्वर–लहरियों से तल्लीन है। संगीत की अविरल धरा प्रकषति तथा चराचर जगत में सदियों से वर्तमान तक समाहित और प्रवाहित है। सभ्यता के सभी चरणों में संगीत की स्वर–लहरी किसी न किसी रूप में अवश्य विद्यमान रही है जिससे इसकी प्राचीनता स्पष्ट हो जाती है। संगीत कला के सूर्य का उदय इस वसुन्धरा पर सृष्टि के प्रारम्भ से ही हो चुका था। अतः संगीत का इतिहास उतना ही पुराना है जितना मानव–मनोभावों का है।

संगीत का विकास क्रम विभिन्न कालो मे वर्णित किया गया है–

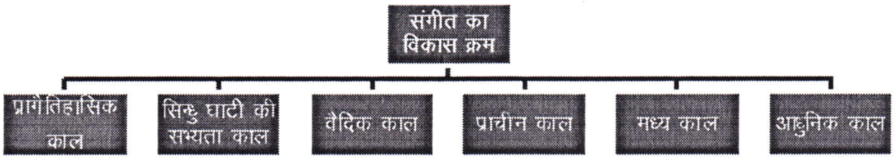

प्रागैतिहासिक काल

इस काल में मानव नितान्त प्राकषतिक अवस्था में था। इस अवस्था में भी उसे संगीत से प्रेम था परन्तु संगीत का कोई कलात्मक स्तर नहीं था। तत्पश्चात् 'उत्तर–पाषाण काल' में संगीत का रूप कुछ अधिक विकसित हुआ किन्तु किसी प्रकार के संगीत वाद्य के निर्माण तथा प्रयोग का वर्णन प्राप्त नहीं होता।

'धतु युग' में संगीत कला का एक सुन्दर रूप देखने को मिलता है। इस युग के व्यक्तियों ने संगीत को धर्मिक कला के रूप में अपनाया था। ये लोग उत्सवों और त्यौहारों को गा–बजाकर मनाते थे। प्रागैतिहासिक काल के विभिन्न युगों में इस प्रकार संगीत का क्रमिक विकास हुआ।

सिन्धु घाटी की सभ्यता का काल

ईसा से सहस्त्रों वर्ष पूर्व सिन्धु नदी की घाटी में एक उन्नत एवं समृद्ध सभ्यता का प्रस्फुटन हुआ। यही भारत की प्रथम सभ्यता थी। संगीत कला का जितना गहरा एवं विषद ज्ञान इस सभ्यता में मिलता है इससे पूर्व कभी नहीं। मोहनजोदड़ो तथा हड़प्पा की खुदाई में प्राप्त पुरातत्वावशेषों से यह विदित होता है कि तत्कालीन जीवन में संगीत का पर्याप्त प्रचलन था। धर्मिक एवं लौकिक समारोहों में गीत, वाद्य एवं नृत्य द्वारा मनोरंजन होता था। खुदाई में प्राप्त तावीजों पर नृत्य और वाद्य के संकेत मिलते हैं तथा साथ ही नृत्य करती हुई स्त्रियों की मूर्तियां प्राप्त हुई हैं।

वैदिक काल

मानव सभ्यता के साथ इस धरती पर अवतरित संगीत कला का विकास शनैः शनैः वैदिक युग में प्रारम्भ हो गया। वैदिक काल वह दीर्घ समयावधि है जिसमें चतुर्वेदों की रचना तथा उनके विविध अंगों का विस्तार हुआ। ''प्राचीन आचार्यो के अनुसार 'वेद वार्ध्मय' इकाई है जिसके अन्तर्गत विनियोग भेद के कारण क, यजु, साम तथा अर्थव का पृथक संहिता के रूप में निर्माण हुआ।''

© 2015 Joumal Anu Books. Authors are responsible for any plagiarism issues.
JAB

Artistic Narration : A Peer Reviewed Journal of Visual & Performing Art ISSN (P) : 0976-7444
Vol. VI 2015 (e) : 2395-7247

आधुनिक भारतीय शास्त्रीय संगीत का प्रादुर्भाव वैदिककालीन सामगान से माना जाता है । वैदिक काल में ऋग्वेद की कुछ ऋचाओं का सस्वर पाठ किया जाता था उन्हीं गेय ऋचाओं को अलग कर सामगान की संज्ञा दी गई। डा॰ परांजपे ने लिखा है – 'ऋग्वेद काल में गायन के साथ ही वाद्य का निरन्तर सहचार्य रहा है। ऋग्वेद में निम्न वाद्यों का उल्लेख पाया जाता हैं –यथा दुंदुभि, वाण, नाड़ी, वेणु, कर्करि, गर्गर,गोध, पिग तथा अघाटि।' दुंदुभि एवं भूमि–दुंदुभि उस समय के प्रमुख अवनद्ध वाद्य थे। दुंदुभि अपनी ध्वनि मात्रा से ही अपने विपक्षी को पराजित करती थी तथा वीरों को उत्साहित करती थी, ऐसी मान्यता ऋग्वेद में पायी जाती है। ये दोनों ढोल वर्ग के चर्म से मढ़े वाद्य थे।

'साम'–शब्द का मूलार्थ गान अर्थात् गेय वस्तु रहा है। सामवेद के दो प्रधन ग्रंथ या भाग हैं– 1 आर्चिक ग्रन्थ 2 गान ग्रन्थ। सामगान में वाणी की निर्दोशता और उसको विभिन्न प्रकार के गाने का विधन आवश्यक था। सामगान के आरम्भ और अवसान दोनों ही 'ओम' स्वर से किये जाते थे।

प्राचीन काल

इस युग में लिखे गये पुराणों (मार्कण्डेय पुराण, वायु पुराण, स्कन्द पुराण आदि), रामायण एवं महाभारत जैसे महाकाव्यों में वर्णित संगीत चर्चा तथा वाद्यों के वर्णन से ज्ञात होता है कि संगीत का प्रचार व प्रसार इस समय भी चलता रहा। इस काल में संगीत के प्रयोगात्मक पक्ष का अधिक विकास हुआ तथा रास आदि नृत्य की नवीन शैलियों का सृजन हुआ। पुराणों में विभिन्न वाद्यों का उल्लेख भी मिलता है। तंत्री वर्ग के वाद्यों के अन्तर्गत वीणा, सुशिर वर्ग में वेणु, शंख, अवनद्ध वर्ग में मृदंग, दुर्दर, पखावज, पटह, आनक, दुंदुभि तथा घन वर्ग में घंटा आदि वाद्यों का विशेष प्रचलन था तथा लोकगीतों व लोक नृत्यों का प्रचार बढ़ा। रामायण एवं महाभारत काल, बौद्धकाल, मौर्यकाल तथा गुप्तकालों में भी संगीत की प्रगति हुई।

मध्यकाल

मध्यकाल को मुख्य दो उपविभागों में बांटा जाता है : *पूर्व मध्यकाल, उत्तर मध्यकाल*। संगीत की प्रगति एवं विकास का क्रम मध्य युग में भी चलता रहा। संगीत काल को भारतीय रियासतों में संरक्षण तथा संगीतज्ञों को आश्रय प्राप्त था। मुगल सभ्यता से प्रभावित भारत का संगीत अपनी प्राचीनता को छोड़कर नवीन रूप में विकसित होने लगा और इस प्रकार दो शाखाओं उत्तर तथा दक्षिण में विभक्त हो गया। दक्षिण भारतीय संगीत अपनी प्राचीनता को संजोये हुये निरन्तर आगे बढ़ता गया तथा उत्तरभारतीय संगीत मुस्लिम संपर्क से नये–नये रूपों में विकसित हुआ। वैदिक युग में ईश्वर–अराधना का साधन संगीत इस समय विलासिता के आवरण से प्रच्छन्न हो गया।

पूर्व मध्य काल में प्रबन्ध गायन प्रचलित था। इसीलिये यह काल 'प्रबन्ध काल' भी कहलाता है। इसी काल में कई महत्वपूर्ण संगीत ग्रन्थों की रचना भी की गई जैसे – संगीत मकरन्द, गीत गोबिन्द, संगीत रत्नाकर आदि ।

© 2015 Journal Anu Books. Authors are responsible for any plagiarism issues.

Artistic Narration : A Peer Reviewed Journal of Visual & Performing Art ISSN (P) : 0976-7444
Vol. VI 2015 (e) : 2395-7247

खिलजी युग में संगीत (1296 से 1316)

खिलजी युग में तीन मुख्य बादशाह हुए लेकिन संगीत के दृष्टिकोण से अलाऊद्दीन खिलजी का शासनकाल (1296–1316 ई॰) ही उल्लेखनीय है। इसके काल में अमीर खुसरो तथा गोपाल नायक जैसे इतिहासकार, प्रसिद्ध कलाकार उत्पन्न हुए। अमीर खुसरो ने साजगिरी, सरपरदा आदि रागों, झूमरां, आड़ाचौताल, फरोदस्त आदि तालों का आविष्कार किया। इस युग में अनेक वाद्यों, रागों, तालों एवं गायन शैलियों के उद्धव का विवरण मिलता है। इससे यह सिद्ध होता है कि संगीत संतोषजनक स्थिति में नहीं था अपितु विकासोन्तुख भी था और इसे शासन का संरक्षण प्राप्त था।

तुगलक युग में संगीत (1320–1412)

तुगलक वंश का पहला सुलतान गयासुद्दीन तुगलक था। इसकी सम्पूर्ण शक्ति अपनी शासन व्यवस्था ठीक करने में ही लगी रही । इसको इतना समय ही नहीं मिला कि वह संगीत तथा अन्य कलाओं की उन्नति की ओर ध्यान दे पाता। ग्यासुद्दीन का बेटा मुहम्मद तुगलक संगीत प्रेमी था। उसके काल में संगीत की दशा काफी सुधर गई। वह विद्वानों, कलाकारों का बहुत आदर करता था जिससे कलाकारों का उत्साह बढ़ा और आम जनता में भी संगीत के प्रति रूचि बढ़ी। प्रान्तीय स्तर पर संगीत समारोह होते थे। नृत्य और गायन में साधरण जनता विशेष रूचि लिया करती थी। मुहम्मद तुगलक के बाद फिरोज तुगलक की धार्मिक कट्टरता के कारण और अन्य बादशाहों के अल्पकालीन अस्थिर शासन अवधियों में संगीत पतनो–मुख हो गया।

लोदी युग में संगीत (1414–1526)

15वीं शताब्दी का आरम्भ लोदी वंश से होता है। इस वंश के तीन सुल्तान हुए–बहलोला लोदी, सिकन्दर लोधी और इब्राहिम लोदी । तुगलक युग में संगीत की गिरी हुई स्थिति अब किंचित सुधरने लगी थी। जन साधारण में संगीत के प्रति कुछ उत्साह पाया जाने लगा । मुसलमान तथा हिन्दू दोनों ही परस्पर सहयोग से कला के अभ्यास में जुट गए। ख्याल, कव्वाली, ठुमरी का प्रचलन इस युग में खूब हुआ। कव्वाली गायन विशेष रूप से लोकप्रिय था, नारियां भी कव्वाली गाती थी, सिकन्दर लोदी संगीत प्रेमी था, उसके दरबार में विद्वानों का समुचित आदर हुआ जिससे भारतीय संगीत की उन्नति हुई।

मुगलकाल में संगीत (1526–1857)

मुगलकाल में संगीत बाबर से बहादुरशाह जफर तक रहा जिसका विस्तृत वर्णन अध्याय–तीन में दिल्ली में मुगल सम्राटों के अधीन संगीत के विकास में दिया गया है।

आधुनिक काल

19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में भारत पर अंग्रेजों का आधिपत्य था। अंग्रेजी सभ्यता के परिणामस्वरूप संगीत का विकसित रूप कुंठित होता चला गया। संगीतज्ञों को अपने प्रति अंग्रेजों के उपेक्षित एवं उदासीन व्यवहार के कारण विवश होकर अपनी आजीविकोपार्जन हेतु संगीत कला को व्यवसायिक रूप प्रदान करना पड़ा। जिसका परिणाम हुआ कि वैदिक काल की

© 2015 Journal Anu Books. Authors are responsible for any plagiarism issues.

Artistic Narration : A Peer Reviewed Journal of Visual & Performing Art ISSN (P) : 0976-7444
Vol. VI 2015 (e) : 2395-7247

उत्कृष्ट संगीत कला समाज के निम्न वर्ग में पंहुच गयी जहां उसका लक्ष्य केवल मात्रा क्षणिक इन्द्रिय सुख रह गया। भारतीय संगीत से प्रभावित सर विलियम जोन्स, कैप्टेन डे आदि अंग्रेजी विद्वानों ने इसे पुनः उभारने का प्रयास किया तथा पुस्तकें लिखी, जिसका समाज के शिक्षित वर्ग पर सुप्रभाव पड़ा और संगीत के प्रति अनादर का भाव कम होने लगा। इसी समय कुछ और भी ग्रन्थ लिखे गये जैसे – संगीत सार, राग कल्पद्रुम, यूनिवर्सल हिस्ट्री ऑफ म्यूजिक आदि।

स्वाधीन भारत के उन्मुक्त पर्यावरण में संगीत का प्रसार देश में तीव्र गति से होने लगा। भारत सरकार ने संगीत कला के विकास में महान योगदान दिया है। सन् 1952 में संगीत कला को प्रोत्साहन देने हेतु कुशल संगीतज्ञों को राष्ट्रपति पदक प्रदान करना प्रारंभ किया। 1953 में 'संगीत नाटक अकादमी' तथा 1954 में 'ललित कला अकादमी' की स्थापना की। आकाशवाणी के विभिन्न केन्द्र स्थापित किये गये। ख्याति प्राप्त वृद्ध संगीतज्ञों को मान–पत्रा भेंट किये जाने लगे। 'संगीत' तथा 'संगीत कला विहार' संगीत पत्रिकाओं का प्रकाशन किया गया। श्रेष्ठ संगीतज्ञों को विदेश में अपनी कला प्रदर्शन हेतु जाने की सुविधएं प्रदान की गई। आज प्रारम्भ से लेकर उच्च शिक्षा तक संगीत एक विषय के रूप में पाठ्यक्रम में सम्मिलित हो चुका है। आकाशवाणी तथा दूरदर्शन के विभिन्न केन्द्रों से शास्त्रीय संगीत तथा सुगम संगीत के अन्तर्गत भजन, गज़ल, गीत आदि के कार्यक्रम प्रसारित किये जाते हैं। इस कारण आज संगीत जन–साधरण के अधिक निकट है।

अतः आधुनिक काल में संगीत की स्थिति के विवेचनात्मक अध्ययन से विदित होता है कि आज गज़ल, भजन, लोक संगीत तथा फिल्मी संगीत की भांति शास्त्रीय संगीत के प्रति भी जन–सामान्य में अत्याधिक रूचि है। शास्त्रीय संगीत–सरिता की अविरल धरा प्रवाहित हो रही है। श्रोताओं की रूचि को दृष्टिगत रखते हुए शास्त्रीय संगीत के कलाकारों ने परंपरागत शैली से थोड़ा हटकर अपने संगीत में परिवर्तन किया है। गायन के क्षेत्रा में तानों पर, तंत्रा वाद्यों के क्षेत्रा में झालों पर तथा संगत में सवाल–जवाब की संगत पर अधिक जोर देने लगे हैं। श्रोताओं की मानसिक चंचलता तथा समयाभाव से प्रभावित उनकी रूचि को देखते हुए ये परिवर्तन असंगत प्रतीत नहीं होते क्योंकि संगीत समारोहों और संगीत महफिलों में सभी प्रकार के श्रोता सम्मिलित होते हैं और संगीत का मुख्य लक्ष्य श्रोताओं के हृदय में आनन्द का सृजन करना है। वास्तव में प्राचीनता व नवीनता का सम्मिश्रण ही संगीत को सहज, सुन्दर, जनरूचि के अनुरूप एवं लोकप्रिय बना सकता है।

सन्दर्भ सूची

- *डा॰ पंकज माला शर्मा, सामगान : उदभव, व्यवहार एवं सिद्धान्त, 1996, पृ॰ 4 से 6*
- *किरण बाला–मध्ययुग में संगीतशास्त्रा के प्रमुख ग्रंथ,अप्रकाशित लघुशोध प्रबंध 1990–91, पृ॰2*
- *प्रो॰ इन्द्राणी चक्रवर्ती, संगीत मजुषा, 1988, पृ॰5–7*
- *भारतीय संगीत का इतिहास, उमेश जोशी, पृ॰ 344*
- *मांडवी सिंह, भारतीय संस्कृति कत्थक परम्परा, 1990, पृ॰ 116*

© 2015 Joumal Anu Books. Authors are responsible for any plagiarism issues.

Artistic Narration : A Peer Reviewed Journal of Visual & Performing Art ISSN (P) : 0976-7444
Vol. VI 2015 (e) : 2395-7247

- छाया भट्टनागर, ''भारत के शास्त्रीय नृत्य, 1981, पृ॰ 52
- रीता धनकर 'हरियाणा एवं पंजाब की संगीत परंपरा, 2003, पृ॰52
- डा॰ नयन भारती, 'दिल्ली घराने की संगीत परंपरा और उस्ताद चाँद खां, 2002, पृ॰31
- परांजपे शरच्चन्द्र श्रीधर, 'भारतीय संगीत का इतिहास', पृ॰17
- भारतीय संगीत की उत्पत्ति एवं विकास, डा॰ जोगिन्दर सिंह बाबरा, पृ॰ 14
- भारतीय संगीत का अभ्यास, उमेश जोशी पृ॰ 309
- भारतीय संगीत की उत्पत्ति एवं विकास, डा॰ जोगिन्दर सिंह बाबरा, पृ॰ 14

© 2015 Journal Anu Books. Authors are responsible for any plagiarism issues.